CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/3/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।

(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. नि:शब्द धीमी चाल और सदियों का साक्षी – जब कोई प्राणी हमारी धरती पर प्रकृति का सबसे शांत लेकिन सबसे मज़बूत प्रहरी बनकर खड़ा हो, तो उसका महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रह जाता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। कछुआ, जो समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के पदचिह्न छोड़ता आया है, आज खतरे में है। 23 मई को मनाया जाने वाला विश्व कछुआ दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि पुकार है, उस मौन जीवन के लिए, जिसे हमने वर्षों तक नज़रअंदाज किया और जो आज हमसे बचाव की गुहार कर रहा है।

मान्यता है कि कछुए धरती पर करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में हैं। उन्होंने हिम युगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। उनके अस्तित्व की स्थिरता, उनकी धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली का प्रमाण है। मगर दुखद है कि आज जिन संकटों का वे सामना कर रहे हैं वे किसी प्राकृतिक आपदा के नहीं, बल्कि मानवीय लालच और लापरवाही के कारण हैं। विश्व में ज्ञात 350 से अधिक कछुआ प्रजातियों में से लगभग 60 फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर हैं। समुद्री कछुए-जैसे मादा ऑलिव रिडले, जो हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए ओडिशा तट पर आती है, को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। इन मूक प्राणियों के लिए संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन है।

कछुआ हमें सिखाता है कि दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है। यह भी कि मौन शक्ति की एक अलग भाषा है, जो शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से बोलती है। उनकी धीमी चाल में हमें भविष्य की गूँज सुनाई देती है कि यदि हम उन्हें बचा पाए तो खुद को बचा पाएँगे। [10 अंक]

1(i). गद्यांश के आधार पर कछुए की महत्ता का मुख्य आधार है : [1 अंक]

(A) नि:शब्द मंद गति

(B) उसका शांत स्वभाव

(C) जैव-विविधता का अंग

(D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

सही उत्तर: (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

हल:

अवधारणा:

- मुख्य आशय पहचानने के लिए गद्यांश में लेखक द्वारा दिया गया व्यापक मूल्यांकन देखें।
- किसी जीव का एक स्वभावगत गुण और उसकी समग्र महत्ता अलग बातें हैं।

चरण 1: निर्णायक कथन खोजें लेखक कहता है कि कछुए का महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रहता; वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। यही कथन उसके महत्त्व को सबसे व्यापक रूप में स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें विकल्प (A) की मंद गति और (B) का शांत स्वभाव कछुए के गुण हैं, उसकी महत्ता का पूरा आधार नहीं। विकल्प (C) केवल जैव-विविधता का अंग होने तक सीमित है, जबकि लेखक उससे आगे का सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्त्व बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष कछुए की महत्ता का मुख्य आधार संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा होना है। अत: सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुख्य आधार पूछे जाने पर उस वाक्य को चुनें जो पूरे अनुच्छेद के व्यापक विचार को समेटता हो।

1(ii). जैव-विविधता से अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता

(B) पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ

(C) सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ

(D) पशु-पक्षियों के जीवन की विविधता

सही उत्तर: (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता

हल:

अवधारणा:

- जैव-विविधता का संबंध जीवन के सभी रूपों की विविधता से है।
- व्यापक अर्थ वाले शब्द को केवल एक जीव-समूह तक सीमित नहीं करना चाहिए।

चरण 1: शब्द का व्यापक अर्थ समझें जैव का संबंध जीवन से और विविधता का संबंध भिन्न-भिन्न रूपों से है। इसलिए जैव-विविधता में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, सूक्ष्म जीव तथा जीवन के अन्य रूप सम्मिलित होते हैं।

चरण 2: विकल्पों का दायरा परखें विकल्प (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता बताता है। (B) केवल पेड़-पौधों, (C) केवल सूक्ष्म जीवों और (D) केवल पशु-पक्षियों तक सीमित हैं। ये व्यापक जैव-विविधता के भाग हैं, उसका पूरा अर्थ नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष जैव-विविधता से अभिप्राय सभी प्रकार के जीवन की विविधता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: जैव-विविधता में किसी एक समूह के बजाय सभी जीवन-रूपों को शामिल करने वाला विकल्प खोजें।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के चिह्न छोड़ने वाले कछुओं का जीवन आज संकट में है।

कारण : उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचने के बाद उनके कारणात्मक संबंध को परखें।
- अतीत में प्राकृतिक संकटों को झेलना और वर्तमान संकट का कारण होना एक ही बात नहीं है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें गद्यांश स्पष्ट कहता है कि आज कछुए खतरे में हैं और लगभग 60 फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर हैं। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें गद्यांश में उनके हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेलने की बात भी कही गई है। अतः कारण में दिया तथ्य सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध जाँचें वर्तमान संकट प्राकृतिक आपदाओं से नहीं, मानवीय लालच और लापरवाही से उत्पन्न है। इसलिए दिया कारण वर्तमान संकट की सही व्याख्या नहीं करता। (A) और (B) कथन को गलत बताते हैं, जबकि (D) गलत कारणात्मक संबंध जोड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है, किंतु दिया कारण कथन की गलत व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सही हों, तब भी पूछें कि दूसरा वाक्य पहले की घटना का वास्तविक कारण बताता है या नहीं।

1(iv). 'मौन शक्ति की एक अलग भाषा है' – आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय प्रतीकात्मक कथन को गद्यांश के प्रसंग से जोड़कर सरल भाषा में समझाएँ।
- यहाँ मौन शक्ति का संबंध कछुए के धैर्य, स्थिरता और निरंतर कर्म से है।

चरण 1: कथन का प्रसंग पहचानें कछुआ बिना शोर किए धीमी गति से जीवन जीता आया है। उसने करोड़ों वर्षों के परिवर्तनों और संकटों का सामना किया है। उसका स्थायी अस्तित्व बताता है कि शक्ति की पहचान केवल तेज गति, ऊँची आवाज या दिखावे से नहीं होती। धैर्य और सहनशीलता भी सामर्थ्य के प्रमाण हैं।

चरण 2: भावार्थ स्पष्ट करें मौन शक्ति शब्दों से अपना प्रभाव घोषित करने के बजाय कर्म और निरंतर अस्तित्व के माध्यम से व्यक्त होती है। कछुए की धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली इसका उदाहरण है। वह हमें सिखाता है कि शांत रहते हुए भी दृढ़ता और लगन से कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है। यह अर्थ गद्यांश के कर्म से बोलने वाले विचार से निकलता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि वास्तविक शक्ति शोर या शब्दों की मोहताज नहीं होती; वह धैर्य, दृढ़ता और निरंतर कर्म के माध्यम से अपना प्रभाव प्रकट करती है। कछुए का शांत और दीर्घकालीन अस्तित्व इसी मौन शक्ति की अभिव्यक्ति है।

त्वरित सुझाव: मौन को कमजोरी न मानें; उत्तर में उसे धैर्य, स्थिरता और कर्म के प्रभाव से जोड़ें।

1(v). "दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है" – से क्या अभिप्राय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में कथन के शब्दार्थ के साथ उसका जीवन-संदेश भी स्पष्ट किया जाता है।
- गद्यांश में कछुए की धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली निरंतरता और धैर्य का प्रतीक है।

चरण 1: कछुए के उदाहरण से जोड़ें कछुआ तेज नहीं दौड़ता, फिर भी करोड़ों वर्षों से उसका अस्तित्व बना हुआ है। उसने बड़े प्राकृतिक परिवर्तनों का सामना किया है। लेखक उसकी इसी स्थिरता को देखकर बताता है कि केवल गति ही जीवन में बने रहने का आधार नहीं है। धीरे बढ़ने पर भी निरंतर प्रयास सार्थक हो सकते हैं।

चरण 2: जीवन-संदेश समझाएँ इस कथन का अभिप्राय है कि उतावली या आगे निकलने की होड़ से अधिक आवश्यक धैर्य और दृढ़ता बनाए रखना है। कठिन परिस्थितियों में टिके रहना, हार न मानना और निरंतर कर्म करना जीवन को स्थायित्व देता है। यहाँ धीमी चाल निष्क्रियता नहीं, बल्कि स्थिर और लगातार आगे बढ़ते रहने का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन में केवल तेज आगे बढ़ना आवश्यक नहीं; धैर्य, निरंतरता और दृढ़ता के साथ कठिनाइयों के बीच टिके रहना अधिक महत्त्वपूर्ण है। कछुए का दीर्घकालीन अस्तित्व इसी संदेश को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय धीमी गति के साथ निरंतर प्रयास जोड़ें; केवल धीरे चलने को संदेश न बनाएँ।

1(vi). कछुओं के संरक्षण हेतु किन्हीं दो उपायों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संरक्षण के उपाय गद्यांश में बताए गए खतरों को कम करने वाले होने चाहिए।
- यहाँ प्रदूषण और समुद्री तटों पर मानवीय हस्तक्षेप प्रमुख खतरे बताए गए हैं।

चरण 1: प्रदूषण घटाने का उपाय बताएँ जल तथा समुद्री तटों पर प्लास्टिक और अन्य कचरा फैलने से रोकना चाहिए। इससे गद्यांश में उल्लिखित जल एवं प्लास्टिक प्रदूषण का खतरा कम होगा।

चरण 2: प्रजनन-स्थलों की सुरक्षा बताएँ कछुओं के अंडे देने वाले समुद्री तटों को अतिक्रमण और अनावश्यक मानवीय हस्तक्षेप से बचाना चाहिए। तटों पर प्रकाश प्रदूषण नियंत्रित करना भी उनकी सुरक्षा में सहायक होगा।

चरण 3: निष्कर्ष दो उपाय हैं: (1) जल तथा प्लास्टिक प्रदूषण रोकना। (2) अंडे देने वाले समुद्री तटों को अतिक्रमण, अनावश्यक रोशनी और मानवीय हस्तक्षेप से सुरक्षित रखना।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश में बताए गए दो खतरे चुनें और फिर उन्हें रोकने की कार्रवाई को उपाय बनाएँ।

1(vii). प्रवासी कछुए भारत में क्यों आते हैं ? इन्हें किससे खतरा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों पक्षों, आने के उद्देश्य और खतरों, का अलग-अलग उत्तर देना आवश्यक है।
- गद्यांश में मादा ऑलिव रिडले और ओडिशा तट का उदाहरण दिया गया है।

चरण 1: भारत आने का उद्देश्य बताएँ प्रवासी समुद्री कछुए प्रजनन के लिए भारत आते हैं। गद्यांश के अनुसार मादा ऑलिव रिडले हजारों किलोमीटर तैरकर ओडिशा तट पर अंडे देने पहुँचती है। इसलिए उनका आगमन अंडे देने से जुड़ा है; इसे भोजन या घूमने के उद्देश्य से नहीं जोड़ना चाहिए, क्योंकि ऐसा गद्यांश में नहीं बताया गया है।

चरण 2: खतरों की पहचान करें इन कछुओं को जल एवं प्रकाश प्रदूषण और मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। गद्यांश में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन भी उनके संकट के प्रमुख कारण बताए गए हैं। ये खतरे उनके जीवन और सुरक्षित प्रजनन-स्थलों के लिए संकट उत्पन्न करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रवासी कछुए भारत के तटों, विशेषकर ओडिशा तट, पर अंडे देने आते हैं। उन्हें जल, प्रकाश और प्लास्टिक प्रदूषण, तटों के अतिक्रमण, मानवीय हस्तक्षेप, अवैध व्यापार तथा जलवायु परिवर्तन से खतरा है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में क्यों और किससे दोनों माँगें हैं; उत्तर में पहले आगमन का उद्देश्य, फिर खतरों की सूची दें।

2. फूल से बोली कली क्यों व्यस्त मुरझाने में है
फ़ायदा क्या गंध औ मकरंद बिखराने में है
तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
अपनी मनमोहक पँखुरियों की छटा क्यों खोल दी
तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से तू खिला
किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला
मुझको देखो मेरी सब खुशबू मुझ ही में बंद है
मेरी सुंदरता है अक्षय अनछुआ मकरंद है
मैं पली काँटों में जब थी दुनिया तब सोती रहीं
मेरी ही क्या ये कभी किसी की भी कभी होती नहीं
ऐसी दुनिया के लिए सौरभ लुटाऊँ किसलिए
स्वार्थी समुदाय का मेला लगाऊँ किसलिए
फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा
फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बँटती नहीं
ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है घटती नहीं [8 अंक]

2(i). फूल और कली के संवाद के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है : [1 अंक]

(A) जीवन की सार्थकता को
(B) जीवन की क्षणभंगुरता को
(C) जीवन की नश्वरता को
(D) जीवन के दृष्टिकोण को

सही उत्तर: (A) जीवन की सार्थकता को

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय संदेश अंतिम पंक्तियों और फूल के आचरण को जोड़कर समझना चाहिए।
- फूल का सुगंध बाँटना परोपकार और जीवन के सार्थक उपयोग का प्रतीक है।

चरण 1: संवाद का आशय कली अपनी सुंदरता और सुगंध अपने तक सीमित रखने में लाभ देखती है। इसके विपरीत फूल वातावरण में अपनी गंध और मकरंद बिखेरता है। उसका उत्तर है कि ज़िंदगी ऐसी पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है। इससे दूसरों के काम आने में जीवन की सार्थकता प्रकट होती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) पूरे संवाद का संदेश व्यक्त करता है। (B) क्षणभंगुरता और (C) नश्वरता जीवन की अल्प अवधि या अंत से संबंधित हैं, जबकि कवि का बल उपयोगी जीवन पर है। (D) दृष्टिकोण का अंतर संवाद का माध्यम है; उसका मूल निष्कर्ष जीवन की सार्थकता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है : जीवन की सार्थकता को।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय अंतिम पंक्तियों को पूरे संवाद के आचरण से जोड़कर देखें।

2(ii). काव्यांश के अनुसार कौन-सी पूँजी बाँटने से बढ़ती है ? [1 अंक]

(A) ज्ञान

(B) ज़िंदगी

(C) संपदा

(D) दुख

सही उत्तर: (B) ज़िंदगी

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का संदर्भ उससे ठीक पहले आए संज्ञा शब्द से पहचानना चाहिए।
- काव्यांश में पूँजी रूपक के माध्यम से जीवन बाँटने का महत्व बताया गया है।

चरण 1: पंक्ति से प्रमाण फूल कहता है, "ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बँटती नहीं" और इसके बाद कहता है, "ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है घटती नहीं"। यहाँ ये का संबंध ज़िंदगी से है। अतः बाँटने पर बढ़ने वाली पूँजी का नाम इसी पाठ के अनुसार ज़िंदगी है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) ज्ञान बाँटने से बढ़ सकता है, लेकिन इस काव्यांश में पूँजी ज्ञान को नहीं कहा गया है। (C) संपदा आर्थिक पूँजी का सामान्य अर्थ है, जबकि यहाँ रूपक है। (D) दुख का उल्लेख इस कथन के विषय के रूप में नहीं हुआ है। इसलिए पाठ से सीधे समर्थित विकल्प (B) है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : ज़िंदगी।

त्वरित सुझाव: लोकप्रचलित कहावत के बजाय उद्धृत पंक्ति में ये का वास्तविक संदर्भ पहचानें।

2(iii). काव्यांश के संदर्भ में 'वाचालता' शब्द का अर्थ है : [1 अंक]

(A) चालाकी

(B) समझदारी

(C) बड़बोलापन

(D) मूर्खता

सही उत्तर: (C) बड़बोलापन

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का सही अर्थ उसके प्रसंग और पात्र के व्यवहार से तय होता है।
- वाचालता का अर्थ बहुत बोलना या बड़बोलापन है।

चरण 1: प्रसंग का विश्लेषण कली लगातार फूल से प्रश्न करती है और अपनी बंद खुशबू तथा अक्षय सुंदरता का बखान करती है। फूल उसके इस लगातार बोलने पर पहले चुप रहता है। इसलिए "उस नादान की वाचालता" में वाचालता का आशय बड़बोलापन है।

चरण 2: विकल्पों का भेद (A) चालाकी में चतुराई या छल का भाव है, जो वाचालता का अर्थ नहीं है। (B) समझदारी विवेक का गुण है, जबकि कली को नादान कहा गया है। (D) मूर्खता नादानी के निकट है, पर बहुत बोलने की प्रवृत्ति का सटीक अर्थ नहीं है। (C) बड़बोलापन ही उपयुक्त शब्दार्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है : बड़बोलापन।

त्वरित सुझाव: नादान और वाचालता को अलग समझें : एक समझ की कमी, दूसरा अधिक बोलने की प्रवृत्ति है।

2(iv). कली और फूल के व्यक्तित्व में क्या अंतर है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की तुलना पात्रों के कथन, व्यवहार और जीवन के प्रति दृष्टि के आधार पर की जाती है।
- कली संचय और निजी लाभ की, जबकि फूल बाँटने और परोपकार की भावना का प्रतीक है।

चरण 1: कली के व्यक्तित्व का आधार कली अपनी सुगंध अपने भीतर बंद रखती है और सुंदरता को अनछुआ बनाए रखने पर गर्व करती है। वह पूछती है कि उपकार के बदले फूल को क्या मिला। इससे उसका स्वार्थपूर्ण, आत्मकेंद्रित और प्रतिदान की अपेक्षा करने वाला स्वभाव सामने आता है। वह संसार को स्वार्थी मानकर उससे दूरी रखना चाहती है। उसकी वाचालता के विपरीत फूल पहले शांत रहता है।

चरण 2: फूल के व्यक्तित्व का आधार फूल खिलते ही अपना सौरभ और मकरंद वातावरण में बाँटता है। वह प्रतिदान की चिंता किए बिना दूसरों के लिए उपयोगी होता है। उसका कथन कि ज़िंदगी व्यय से बढ़ती है, उसकी उदारता, परोपकार और जीवन की सार्थकता की समझ प्रकट करता है। वह कली की बात सुनकर धैर्य और सहज विवेक से उत्तर देता है। इस प्रकार दोनों का अंतर केवल बोलने का नहीं, जीवन जीने की भावना का है।

चरण 3: निष्कर्ष कली स्वार्थी, आत्मकेंद्रित और प्रतिफल की अपेक्षा करने वाली है; फूल उदार, परोपकारी, शांत और जीवन का मर्म समझने वाला है।

त्वरित सुझाव: तुलना में दोनों पात्रों के समान आधार चुनें : सुगंध का उपयोग, प्रतिदान की अपेक्षा और बोलने का व्यवहार।

2(v). कली अपना सौंदर्य और महक किसी के साथ क्यों नहीं बाँटना चाहती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के निर्णय का कारण उसके अपने कथनों से स्पष्ट करना चाहिए।
- कली का संसार के प्रति अविश्वास और अपनी संपदा सुरक्षित रखने की इच्छा उसके व्यवहार का आधार हैं।

चरण 1: संसार के प्रति अविश्वास कली को लगता है कि जब वह काँटों के बीच पल रही थी, तब दुनिया सो रही थी। उसके अनुसार दुनिया किसी की नहीं होती और केवल अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के पास आती है। इसी अनुभव और धारणा के कारण वह संसार को अपनी सुगंध देने योग्य नहीं मानती। वह नहीं चाहती कि उसकी महक पाकर स्वार्थी लोगों की भीड़ उसके पास आए।

चरण 2: सौंदर्य और सुगंध को सुरक्षित रखने की इच्छा कली अपनी खुशबू को अपने भीतर बंद रखने तथा मकरंद को अनछुआ रखने पर गर्व करती है। उसे लगता है कि बाँटने से सुंदरता और सुगंध समाप्त होंगी तथा बदले में उसे कुछ नहीं मिलेगा। फूल से उसका प्रश्न, "इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला", प्रतिफल की यही अपेक्षा स्पष्ट करता है। इसलिए वह अपने निजी लाभ को प्राथमिकता देकर अपना सौंदर्य और महक किसी से नहीं बाँटना चाहती।

चरण 3: निष्कर्ष कली संसार को स्वार्थी और उपकार का प्रतिदान न देने वाला मानती है। वह अपना सौंदर्य, मकरंद और सुगंध अक्षय रखने की स्वार्थपूर्ण इच्छा से उन्हें बाँटना नहीं चाहती।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कली के दोनों कारण जोड़ें : दुनिया पर अविश्वास और अपनी सुंदरता सुरक्षित रखने की इच्छा।

2(vi). कली अथवा फूल, आप किसके विचारों से सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कपूर्ण मत में स्पष्ट सहमति के साथ काव्यांश से उसका समर्थन देना चाहिए।
- दूसरों के लिए उपयोगी होना जीवन के मूल्य को बढ़ाता है।

चरण 1: विचार का चयन मैं फूल के विचारों से सहमत हूँ। फूल अपनी सुगंध और मकरंद बाँटकर वातावरण को सुखद बनाता है। वह केवल अपने सौंदर्य को बचाकर रखने के बजाय उसका लाभ दूसरों तक पहुँचाता है। इसलिए उसका जीवन अधिक उपयोगी बनता है।

चरण 2: सहमति का तर्क फूल के अनुसार ज़िंदगी वह पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है। प्रेम, सहयोग और अपनी क्षमताएँ बाँटने से दूसरों को सुख मिलता है तथा अपना जीवन भी सार्थक होता है। कली की तरह केवल निजी लाभ और प्रतिदान की चिंता करने से यह व्यापक उपयोगिता नहीं बनती।

चरण 3: निष्कर्ष मैं फूल से सहमत हूँ, क्योंकि निःस्वार्थ भाव से दूसरों के काम आने में ही जीवन की सार्थकता है।

त्वरित सुझाव: अपना मत लिखने के बाद फूल की अंतिम पंक्ति से उसका ठोस संबंध अवश्य स्थापित करें।

3(i). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
तारों भरी रात का सौंदर्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए गए विषय को कल्पना, संवेदना और निजी अनुभव से जीवंत बनाया जाता है। यहाँ रात के दृश्य के साथ उससे उत्पन्न शांति और आश्चर्य व्यक्त करना उपयुक्त है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक शीर्षक, क्रमबद्ध दृश्य और प्रभावपूर्ण समाप्ति रखें। दृश्य, ध्वनि और स्पर्श के बिंब विषय की सुंदरता को उभारते हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले खुले आकाश और टिमटिमाते तारों का चित्र बनाएँ। इसके बाद छत पर बैठे व्यक्ति का अनुभव, ठंडी हवा और परिवेश की निस्तब्धता जोड़ें। अंत में इस सौंदर्य से मिलने वाले आत्मिक सुकून की बात कहें। वर्णन का क्रम बाहर के दृश्य से भीतर की अनुभूति की ओर रखें। उपमाएँ सहज हों और विषय से जुड़ी रहें। अनावश्यक तथ्य तथा वैज्ञानिक विवरण लेख की भावात्मक एकाग्रता को कम कर सकते हैं। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र जैसी संबोधन और हस्ताक्षर की औपचारिकताएँ आवश्यक नहीं हैं।

चरण 2: पूरा आदर्श लेख **तारों भरी रात का सौंदर्य**

दिन का कोलाहल थम चुका था। मैं छत पर पहुँचा तो लगा, आकाश ने काली मखमली चादर पर असंख्य दीप सजा दिए हैं। तारे कभी चमकते, कभी जैसे आँख मिचौली खेलते दिखाई देते थे। ठंडी हवा चेहरे को सहला रही थी और दूर पेड़ों से झींगुरों की धीमी आवाज़ आ रही थी। शहर की रोशनी से दूर आकाश कितना स्पष्ट लगता है! दादी की सुनाई तारों की कहानियाँ याद आने लगीं। एक टूटता तारा क्षण भर के लिए उजली लकीर खींच गया। मन की सारी उलझनें उस विशाल आकाश के सामने छोटी लगने लगीं। तारों भरी रात केवल आँखों का उत्सव नहीं, आत्मा का विश्राम भी है। प्रकृति की यह निश्शब्द सुंदरता हमें ठहरकर जीवन को महसूस करना सिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस लेख में तारों की चमक, शीतल हवा और रात्रि की ध्वनियों के माध्यम से सौंदर्य का अनुभव प्रस्तुत हुआ है। अंत में बाहरी दृश्य को मन की शांति से जोड़ने पर रचना एक पूर्ण भाव तक पहुँचती है।

त्वरित सुझाव: दृश्य को जीवंत बनाने के लिए केवल विशेषण न गिनाएँ; तारों की चमक, हवा का स्पर्श और रात की ध्वनि जैसे अनुभव जोड़ें।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में पुस्तक मेले की चहल-पहल और लोकार्पण के विशेष क्षण को अनुभवपूर्ण भाषा में उभारना चाहिए। घटनाओं का क्रम पाठक को आयोजन का सहभागी बनाता है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में शीर्षक, दृश्य, लोकार्पण और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया रखें। विषय रचनात्मक लेख है; अतः समाचार की तरह केवल सूचना देने के बजाय भाव और वातावरण का चित्रण भी आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना आरंभ में मेले का वातावरण दिखाएँ। फिर मंच, सजी हुई पुस्तक और पाठकों की उत्सुकता का वर्णन करें। आवरण हटने, लेखक की बात और पाठकों की प्रतिक्रिया से मुख्य घटना प्रस्तुत करें। अंत में पुस्तक तथा पाठक के संबंध पर अपना अनुभव रखें। लेख को शीर्षक दें और अनुच्छेद का प्रवाह बनाए रखें। कल्पित आयोजन का वर्णन करते समय उसे किसी वास्तविक प्रसिद्ध लेखक का प्रमाणित कार्यक्रम न बनाएँ। विवरण परस्पर संगत हों तथा भाषा सहज रहे।

चरण 2: पूरा आदर्श लेख **पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण**

पुस्तक मेले में हर ओर रंगीन आवरणों और नए विचारों की बहार थी। घूमते हुए मेरी दृष्टि एक छोटे मंच पर ठहर गई। वहाँ एक नई कहानी-पुस्तक का लोकार्पण होने वाला था। सामने बैठे पाठकों की आँखों में उत्सुकता थी। लेखक मंच पर आए तो तालियों से उनका स्वागत हुआ। जैसे ही पुस्तक का आवरण हटाया गया, कैमरे चमक उठे। लेखक ने बताया कि इन कहानियों में हमारे आसपास के साधारण लोगों के असाधारण अनुभव हैं। उन्होंने एक अंश पढ़ा तो श्रोताओं के चेहरे पर कभी मुसकान, कभी गंभीरता उभर आई। कार्यक्रम के बाद मैंने पुस्तक खरीदी और लेखक के हस्ताक्षर लिए। लौटते समय लगा, लोकार्पण केवल पुस्तक का अनावरण नहीं, पाठकों के लिए एक नई दुनिया का द्वार खुलना है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख मेले के सामान्य वातावरण से शुरू होकर लोकार्पण के विशेष क्षण तक पहुँचता है। पुस्तक खरीदने और लेखक से मिलने का अनुभव विषय को व्यक्तिगत बनाता है, जबकि अंतिम विचार आयोजन का साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: मेले का वर्णन करते समय लोकार्पण की मुख्य घटना केंद्र में रखें; आवरण हटने और पाठकों की प्रतिक्रिया का दृश्य अवश्य जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के विभिन्न पक्षों को मौलिक भाषा, स्पष्ट विचार और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- इस विषय में भारत की उपलब्धियों के साथ उसकी विश्वशांति, सहयोग और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता को जोड़ना उपयोगी है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा लेख का शीर्षक प्रश्न के विषय के अनुरूप रखें। आरंभ में विश्व में भारत की उभरती पहचान का संकेत दें। मध्य भाग में विज्ञान, अर्थव्यवस्था, तकनीक और कूटनीति के उदाहरण जोड़ें। अंत में यह स्पष्ट करें कि भारत की शक्ति का उद्देश्य साझा प्रगति और मानवता का कल्याण है। विचारों को लगभग 120 शब्दों के सुसंगत लेख में प्रस्तुत करें। उपलब्धियों को अलग-अलग गिनाने के स्थान पर उनके बीच संबंध स्पष्ट करें। भाषा आत्मविश्वासपूर्ण हो, किंतु अतिशयोक्तिपूर्ण न हो। आरंभ से निष्कर्ष तक एक केंद्रीय विचार बना रहना चाहिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श लेख **अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व**

विश्व के बदलते परिदृश्य में भारत की आवाज़ अधिक प्रभावशाली हो रही है। विज्ञान, अर्थव्यवस्था और कूटनीति में उसकी उपलब्धियाँ नई पहचान गढ़ रही हैं। चंद्रयान की सफलता ने भारतीय प्रतिभा का परिचय दिया है। डिजिटल भुगतान और तकनीकी नवाचार भी अनेक

देशों के लिए प्रेरणा बने हैं। अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में भारत विकासशील देशों की समस्याएँ उठाता है और सहयोग का मार्ग सुझाता है। योग तथा भारतीय संस्कृति ने विश्व के लोगों को निकट लाया है। आपदाओं में सहायता और शांति का समर्थन उसकी जिम्मेदार भूमिका दर्शाते हैं। यह बढ़ता प्रभाव हमारे लिए गर्व के साथ दायित्व भी है। भारत का वास्तविक वर्चस्व दूसरों पर प्रभुत्व जमाने में नहीं, बल्कि न्याय, मैत्री और साझा प्रगति का नेतृत्व करने में निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष यह लेख भारत की उपलब्धियों, विश्वहितकारी भूमिका और जिम्मेदार नेतृत्व को जोड़ते हुए विषय का संतुलित चित्र प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: लेख में उपलब्धियों की सूची भर न दें; प्रत्येक उदाहरण को भारत की वैश्विक भूमिका और मानवीय दृष्टि से जोड़ें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

हिन्दी नेट पत्रकारिता के स्वरूप और विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता में समाचार और विचार वेबसाइटों तथा डिजिटल माध्यमों से पाठकों तक पहुँचते हैं।
- हिन्दी नेट पत्रकारिता के विकास में समाचारपत्रों के ऑनलाइन संस्करण और यूनिकोड जैसी तकनीकी सुविधाओं का महत्त्व है।

चरण 1: स्वरूप और विकास के मुख्य बिंदु उत्तर में दो पक्ष जोड़ने हैं। स्वरूप बताते समय इंटरनेट पर हिन्दी समाचारों का प्रकाशन तथा पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो की संयुक्त प्रस्तुति लिखें। विकास में आरंभिक फ़ॉन्ट संबंधी बाधाओं के बाद यूनिकोड, ऑनलाइन संस्करणों और बढ़ती पहुँच की भूमिका बताएँ।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हिन्दी नेट पत्रकारिता इंटरनेट पर समाचारों और विचारों की त्वरित, संवादात्मक प्रस्तुति है। इसमें पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो का समावेश होता है। समाचारपत्रों के ऑनलाइन संस्करणों से इसका विस्तार हुआ। यूनिकोड और बढ़ती इंटरनेट पहुँच ने इसके विकास को गति दी।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी नेट पत्रकारिता का स्वरूप बहुमाध्यमी और संवादात्मक है; तकनीकी सुविधा तथा ऑनलाइन समाचार मंचों ने उसका विस्तार किया है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों शब्दों पर ध्यान दें: स्वरूप में विशेषताएँ और विकास में विस्तार के कारण अवश्य लिखें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारीय लेखन को कुछ विद्वान ज़ल्दबाज़ी में लिखा गया साहित्य मानते हैं, क्या आप उनके विचारों से सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन समसामयिक घटनाओं की तथ्यपरक जानकारी समय पर देने का माध्यम है।
- साहित्य और पत्रकारिता में भाषा तथा संवेदना का संबंध है, किंतु पत्रकारिता में समयसीमा, सत्यापन और जनहित की विशेष जिम्मेदारी होती है।

चरण 1: कथन का तर्कपूर्ण मूल्यांकन प्रश्न में केवल सहमति या असहमति लिखना पर्याप्त नहीं है। समाचार की तात्कालिकता कथन के पक्ष में तर्क देती है। फिर भी जल्दबाज़ी को लापरवाही का पर्याय न बनाएँ। तथ्य की जाँच और निष्पक्ष प्रस्तुति आवश्यक हैं; इसलिए आंशिक सहमति संतुलित दृष्टिकोण होगी।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मैं इस विचार से आंशिक रूप से सहमत हूँ। पत्रकार समयसीमा के भीतर घटनाओं को प्रभावपूर्ण

भाषा में लिखता है, इसलिए यह कथन उचित लगता है। किंतु उसका लेखन तथ्यपरक, सत्यापित और निष्पक्ष होना चाहिए; जल्दबाज़ी अशुद्धि का औचित्य नहीं बनती।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन की तात्कालिकता इस कथन का आधार है, लेकिन सत्यापन और निष्पक्षता उसकी अनिवार्य शर्तें हैं।

त्वरित सुझाव: सहमति के साथ कारण दें और यह सीमा स्पष्ट करें कि जल्दी लिखने से गलत तथ्य देना उचित नहीं हो जाता।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों से जुड़ी ख़बरें क्यों छापी जाती हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्र-पत्रिकाओं का पाठक वर्ग विविध होता है; इसलिए सभी पाठकों की रुचियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखना पड़ता है।
- पत्रकारिता समाज के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों की जानकारी देकर पाठकों की समझ का विस्तार करती है।

चरण 1: पाठकों की आवश्यकताएँ समझिए किसी पाठक की रुचि राजनीति में होती है, तो किसी की खेल, विज्ञान, व्यापार, साहित्य या मनोरंजन में। केवल एक विषय की खबरें देने से दूसरे क्षेत्रों में रुचि रखने वाले पाठकों की सूचना संबंधी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होंगी। इसलिए समाचारों का चयन व्यापक पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समाचार पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों की रुचियाँ और आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। इसलिए राजनीति, खेल, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा और मनोरंजन जैसे विविध विषयों की खबरें छापी जाती हैं। इससे पाठकों को अपने रुचिक्षेत्र की जानकारी और समाज की व्यापक समझ मिलती है।

चरण 3: निष्कर्ष विभिन्न पाठकों की रुचियों तथा सूचना संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और व्यापक जानकारी देने के लिए विविध क्षेत्रों की खबरें छापी जाती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो बातें जोड़ें: पाठकों की अलग-अलग रुचियाँ और विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी की आवश्यकता।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
दृश्य नाटकों के विपरीत रेडियो नाटक में पात्रों संबंधी सभी जानकारियाँ हमें किससे मिलती हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; उसमें मंच, वेशभूषा, चेहरे और हावभाव दर्शक को दिखाई नहीं देते।
- रेडियो नाटक में पात्रों का परिचय और उनकी विशेषताएँ मुख्यत: संवाद तथा आवाज़ के माध्यम से सामने आती हैं।

चरण 1: माध्यम का अंतर पहचानिए दृश्य नाटक में दर्शक पात्र की पोशाक, उम्र, गतिविधि और हावभाव देखकर बहुत कुछ समझ लेता है। रेडियो पर यह दृश्य सुविधा नहीं होती। इसलिए लेखक संवादों में आवश्यक संकेत पिरोता है और कलाकार आवाज़ के उतार-चढ़ाव से पात्र की भावनाएँ प्रकट करता है। ध्वनि प्रभाव वातावरण का बोध कराते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक में पात्रों संबंधी सभी आवश्यक जानकारियाँ उनके संवादों और आवाज़ से मिलती हैं, क्योंकि रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें पात्र दिखाई नहीं देते। इसलिए उनका परिचय, स्वभाव, संबंध और मन:स्थिति संवादों तथा बोलने के ढंग से स्पष्ट किए जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रों की जानकारी संवादों और आवाज़ से मिलती है, क्योंकि रेडियो में दृश्य दिखाई नहीं देते।

त्वरित सुझाव: उत्तर की शुरुआत संवादों से करें और कारण में रेडियो का केवल श्रव्य माध्यम होना अवश्य लिखें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

यद्यपि लेखन का निश्चित या बँधा-बँधाया फ़ॉर्मूला नहीं है फिर भी लेखन के लिए आवश्यक किन्हीं दो बातों का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अच्छा लेखन केवल किसी निश्चित साँचे से नहीं बनता; वह निरंतर अभ्यास से विकसित होने वाली सृजनात्मक क्षमता है।
- सूक्ष्म अवलोकन और सजग अध्ययन लेखक को अनुभव, विचार तथा अभिव्यक्ति की सामग्री देते हैं।

चरण 1: दो आवश्यक बातें चुनिए पहली आवश्यक बात है अपने आसपास के जीवन को ध्यान से देखना और अनुभवों पर विचार करना। इससे विषय तथा मौलिक दृष्टि विकसित होती है। दूसरी बात है नियमित अध्ययन के साथ लिखने और लिखे हुए को सुधारने का अभ्यास। इससे भाषा स्पष्ट होती है और विचारों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना आता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखन के लिए पहली आवश्यक बात है आसपास के जीवन का सूक्ष्म अवलोकन करके अनुभव और विचार संचित करना। दूसरी बात है नियमित पढ़ना और लिखने का अभ्यास करना। अभ्यास के साथ अपने लिखे को सँवारने से भाषा तथा अभिव्यक्ति प्रभावशाली बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष सूक्ष्म अवलोकन और नियमित अध्ययन सहित लेखन-अभ्यास लेखन क्षमता विकसित करने की दो आवश्यक बातें हैं।

त्वरित सुझाव: कोई दो बातें अलग-अलग स्पष्ट करें और हर बात को लेखन में उसके उपयोग से जोड़ें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आप क.ख.ग. समाचार पत्र के संपादक देव/देवांशी हैं। हाल ही में आपने अ.ब.स. रेलवे स्टेशन का दौरा किया है। वहाँ की सुव्यवस्था, यात्रियों को दी जाने वाली सुविधाओं को देखकर आपको सुखद अनुभूति हुई। समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए इसका विवरण देते हुए एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में किसी स्थान या घटना का तथ्यपरक, क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। यहाँ रेलवे स्टेशन की सुव्यवस्था और यात्री-सुविधाएँ केंद्र में रहेंगी।
- समाचारपत्र की रिपोर्ट में शीर्षक, रिपोर्टर का नाम तथा स्थान और तिथि दिए जाते हैं। भाषा स्पष्ट और वर्णनात्मक होनी चाहिए; पत्र जैसा संबोधन नहीं दिया जाता।

चरण 1: प्रारूप और विषय का चयन शीर्षक में स्टेशन की सुव्यवस्था का संकेत दें। रिपोर्टर के रूप में देव और समाचारपत्र के रूप में क.ख.ग. का उल्लेख करें। स्थान अ.ब.स. रेलवे स्टेशन रखें। प्रश्न में निश्चित तिथि नहीं दी गई है, इसलिए प्रारूप के लिए उपयुक्त तिथि चुनी जा सकती है।

चरण 2: सामग्री को क्रम में रखें पहले स्टेशन के समग्र वातावरण का परिचय दें। फिर सफाई, पेयजल, बैठने की व्यवस्था, सूचना-प्रणाली, सुरक्षा और सहायता जैसी यात्री-सुविधाओं का विवरण रखें। अंत में इनके कारण यात्रियों को मिले आराम और अपनी सुखद अनुभूति को व्यक्त करें। लगभग 80 शब्दों के मुख्य विवरण में अनावश्यक आँकड़े या अतिशयोक्ति न जोड़ें।

चरण 3: प्रकाशन के लिए आदर्श रिपोर्ट **सुव्यवस्था और सुविधाओं से सुखद बना रेल-सफर**

देव, संपादक, क.ख.ग. समाचारपत्र

अ.ब.स., 15 मार्च।

अ.ब.स. रेलवे स्टेशन के हालिया दौरे में सुव्यवस्था देखकर सुखद अनुभूति हुई। प्लेटफॉर्म स्वच्छ थे और कूड़ेदान उचित स्थानों पर रखे थे। यात्रियों के लिए शुद्ध पेयजल, बैठने की पर्याप्त व्यवस्था तथा साफ शौचालय उपलब्ध थे। पूछताछ केंद्र, स्पष्ट सूचना-पट्ट और नियमित उद्घोषणाएँ यात्रियों का मार्गदर्शन कर रहे थे। सुरक्षा-कर्मी सतर्क थे तथा कर्मचारी विनम्रता से सहायता कर रहे थे। बुजुर्गों और दिव्यांग

यात्रियों के लिए सहायता की व्यवस्था भी दिखी। इन सुविधाओं ने यात्रा को सहज, सुरक्षित और आरामदायक बनाया।

चरण 4: निष्कर्ष यह रिपोर्ट निर्धारित स्टेशन की सुव्यवस्था और यात्री-सुविधाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है तथा समाचारपत्र में प्रकाशन के उपयुक्त प्रारूप का पालन करती है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट लिखते समय शीर्षक, रिपोर्टर, स्थान और तिथि के बाद सफाई, सूचना, सुरक्षा तथा यात्री-सुविधाओं को क्रम से रखें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

टेलीविज़न पर प्रसारण से पूर्व किसी भी सूचना को समाचार बनने के लिए किन-किन चरणों से गुजरना पड़ता है ? संक्षेप में लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न में समाचार क्रमशः विस्तार प्राप्त करता है। उपलब्ध सूचना और दृश्य-सामग्री के अनुसार प्रस्तुति केवल तत्काल सूचना से शुरू होकर विस्तृत रिपोर्ट तक पहुँचती है।
- समाचार-प्रस्तुति के प्रमुख चरण हैं—फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट और लाइव तथा एंकर-पैकेज। हर चरण में विश्वसनीय सूचना आवश्यक है।

चरण 1: आरंभिक सूचना और संवाददाता का विवरण सूचना मिलते ही उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंश फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में दिया जाता है। प्रारंभिक विवरण को एंकर बिना दृश्यों के पढ़ता है; इसे ड्राई एंकर कहते हैं। फोन-इन में घटनास्थल पर उपस्थित संवाददाता से फोन पर बातचीत कर समाचार का विस्तार किया जाता है। इन चरणों में दृश्य न मिलने पर भी पुष्ट जानकारी दर्शकों तक पहुँचती है।

चरण 2: दृश्य, प्रत्यक्ष कथन और संपूर्ण रिपोर्ट दृश्य मिल जाने पर एंकर के विवरण के साथ उन्हें दिखाना एंकर-विजुअल है। संबंधित व्यक्तियों के रिकॉर्ड किए गए कथन बाइट के रूप में जोड़े जाते हैं। लाइव में संवाददाता घटनास्थल से सीधे जानकारी देता है। अंत में एंकर-पैकेज के अंतर्गत दृश्यों, कथनों, संवाददाता की रिपोर्ट और आवश्यक पृष्ठभूमि को संपादित करके विस्तृत समाचार प्रस्तुत किया जाता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर सूचना पहले फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ बनकर आती है। ड्राई एंकर में समाचार-वाचक बिना दृश्य के जानकारी देता है। फोन-इन में संवाददाता से बातचीत होती है। एंकर-विजुअल में समाचार के साथ घटनास्थल के दृश्य दिखाए जाते हैं। एंकर-बाइट में संबंधित व्यक्तियों के कथन जोड़े जाते हैं और लाइव में संवाददाता घटनास्थल से सीधा विवरण देता है। अंततः एंकर-पैकेज में दृश्य, कथन, पृष्ठभूमि और रिपोर्ट संपादित रूप में प्रस्तुत होते हैं। सूचना की पुष्टि और विश्वसनीयता इन सभी चरणों में आवश्यक रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष समाचार का विकास फ्लैश से ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट और लाइव होते हुए एंकर-पैकेज तक होता है; प्रत्येक चरण सूचना में विस्तार और दृश्य-प्रमाण जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: क्रम याद रखने के लिए पहले तत्काल सूचना, फिर एंकर, संवाददाता, दृश्य, कथन और अंत में संपादित पैकेज का संबंध जोड़ें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आपके विद्यालय ने ग्रीष्मावकाश के दौरान 'योग कक्षाओं' का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने भी इन कक्षाओं का लाभ उठाया। अपनी स्कूल पत्रिका के लिए विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम की एक रिपोर्ट देव/देवांशी की ओर से तैयार कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में किसी संपन्न कार्यक्रम का तथ्यपरक, क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। स्कूल पत्रिका की रिपोर्ट में शीर्षक तथा रिपोर्ट लिखने वाले का नाम आवश्यक है।
- इस प्रश्न में योग कक्षाओं का आयोजन, विद्यार्थियों और अभिभावकों की सहभागिता तथा कार्यक्रम की उपयोगिता प्रमुख बिंदु हैं। भाषा औपचारिक और भूतकाल में होनी चाहिए।

चरण 1: रिपोर्ट का प्रारूप और विषयवस्तु पहले कार्यक्रम को स्पष्ट करने वाला शीर्षक दें और उसके नीचे देव अथवा देवांशी का नाम लिखें। मुख्य विवरण में ग्रीष्मावकाश, विद्यालय में योग प्रशिक्षण, दोनों समूहों की सहभागिता और उससे हुए लाभ समेटें। प्रश्न में कोई निश्चित तिथि या स्थान नहीं दिया गया है, इसलिए अनावश्यक सटीक आँकड़े देने की आवश्यकता नहीं है। लगभग 80 शब्दों के विवरण में घटना की मुख्य जानकारी पूरी आनी चाहिए।

चरण 2: स्कूल पत्रिका के लिए आदर्श रिपोर्ट **योग कक्षाओं से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता**

रिपोर्ट : देवांशी

ग्रीष्मावकाश के दौरान हमारे विद्यालय में योग कक्षाओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षकों ने सरल योगासनों, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास कराया तथा उनके लाभ समझाए। प्रतिभागियों को नियमित अभ्यास और संतुलित दिनचर्या अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। सामूहिक अभ्यास से विद्यालय में आनंदपूर्ण वातावरण बना। विद्यार्थियों और अभिभावकों ने इस पहल को उपयोगी बताया। कार्यक्रम ने शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और पारिवारिक सहभागिता के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

चरण 3: निष्कर्ष इस रिपोर्ट में शीर्षक, रिपोर्टकर्ता का नाम, आयोजन, सहभागिता और उपयोगिता का संक्षिप्त तथा क्रमबद्ध विवरण दिया गया है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट लिखते समय पहले क्या, कब, कहाँ, किसके लिए और क्या परिणाम हुआ जैसे बिंदु चुनें; फिर उन्हें संक्षिप्त विवरण में जोड़ें।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कविता के बहाने' कविता से उद्धृत पंक्ति 'सब घर एक कर देने के माने' का आशय बच्चों और कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। दोनों में क्या समानता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चों का खेल कविता की व्यापकता और बंधनमुक्त सृजनशीलता को समझाने का माध्यम है। दोनों के लिए अपनापन किसी एक घर या सीमा तक सीमित नहीं रहता।
- 'सब घर एक कर देने' का अर्थ घरों का भौतिक रूप से मिलना नहीं, बल्कि अपने-पराए का अंतर मिटाकर सबको आत्मीयता से जोड़ना है।

चरण 1: बच्चों और कविता का संबंध समझें बच्चे खेलते समय अपने और दूसरे के घर का भेद भूल जाते हैं। उनका सहज मेल-जोल सबको एक खेल का सहभागी बना देता है। इसी प्रकार कविता अपनी संवेदना और कल्पना से अलग-अलग लोगों के अनुभवों को जोड़ती है। पंक्ति का आशय समानता और आत्मीयता के इसी विस्तार से है। यहाँ किसी एक परिवार की संपत्ति या अधिकार का प्रश्न नहीं है; कवि मनुष्यों के बीच बनी कृत्रिम दूरी के हटने की बात कहता है। इसलिए उत्तर में बच्चों की सहजता तथा कविता की व्यापक मानवीय संवेदना दोनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर 'सब घर एक कर देने के माने' का आशय अपने-पराए और भेदभाव की सीमाएँ मिटाना है। बच्चे खेलते समय सब घरों को अपना मानकर सहज आत्मीयता स्थापित करते हैं। कविता भी कल्पना और संवेदना से सभी मनुष्यों को जोड़ती है। दोनों में निष्कपटता, बंधनमुक्त विस्तार और सबको अपनाने की भावना है। वे संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर एकता रचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों और कविता की समानता सबको अपना बनाने वाली सहजता, व्यापकता और भेदभावरहित आत्मीयता में है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति में घर को केवल इमारत न समझें; बच्चों के खेल से कविता की मानवीय एकता तक अर्थ का विस्तार दिखाएँ।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से उद्धृत पंक्ति 'परदे पर वक़्त की कीमत है' – में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता टेलीविजन द्वारा पीड़ा को दर्शनीय कार्यक्रम में बदलने की संवेदनहीन प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है। कार्यक्रम बनाने वाले की प्राथमिकता पीड़ित की गरिमा के बजाय प्रभाव पैदा करना है।
- 'परदे पर वक़्त की कीमत' में समय के व्यावसायिक मूल्य और मानवीय संवेदना के अवमूल्यन का विरोध सामने आता है।

चरण 1: प्रसंग से व्यंग्य का लक्ष्य पहचानें कार्यक्रम संचालक दिव्यांग व्यक्ति से उसकी पीड़ा का प्रदर्शन कराना चाहता है। दर्शकों को भावुक कर देने वाला दृश्य तैयार करना उसके लिए अधिक आवश्यक है। समय की कीमत का तर्क देकर वह व्यक्ति की सहज अभिव्यक्ति और मनःस्थिति की उपेक्षा करता है। यहाँ समय का मूल्य मानना अपने आप में आलोचना का विषय नहीं है; व्यंग्य इस बात पर है कि कार्यक्रम की सफलता के आगे व्यक्ति का सम्मान गौण हो गया है। कविता इसी निर्ममता को उजागर करती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर इस पंक्ति में टेलीविजन की व्यावसायिक और संवेदनहीन प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। संचालक के लिए परदे का समय मूल्यवान है, किंतु दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा और गरिमा का मूल्य नहीं। वह निर्धारित समय में उसे रुलाकर दर्शकों को भावुक करना चाहता है। इस प्रकार करुणा दिखाने वाला कार्यक्रम वास्तव में पीड़ा को प्रदर्शन की वस्तु बनाकर अपनी सफलता चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यंग्य का केंद्र वह माध्यम है जो मानवीय दुःख को समझने के बजाय उसका भावुक प्रदर्शन कर अपनी सफलता सुनिश्चित करना चाहता है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य स्पष्ट करते समय समय की व्यावसायिक कीमत और मनुष्य की उपेक्षित गरिमा को साथ रखकर कार्यक्रम की संवेदनहीनता दिखाएँ।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
राम के प्रति लक्ष्मण के प्रेम और समर्पण भाव को 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के इस प्रसंग में राम के विलाप से लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, त्याग और सेवाभाव व्यक्त होता है। चरित्र का परिचय केवल लक्ष्मण के कार्यों से नहीं, राम द्वारा उन कार्यों के स्मरण से भी मिलता है।
- उत्तर में प्रेम का स्वभाव और समर्पण का ठोस उदाहरण जोड़ना चाहिए। वनगमन तथा राम के दुःख को अपना दुःख मानना लक्ष्मण के निःस्वार्थ आचरण के प्रमाण हैं।

चरण 1: राम के स्मरण का अर्थ समझिए मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम याद करते हैं कि वे उनका दुःख कभी सह नहीं पाते थे। उनका

स्वभाव कोमल था और राम के प्रति स्नेह अत्यंत गहरा था। इसलिए राम को उनका इस समय न उठना असह्य लगता है। यह स्मरण दिखाता है कि लक्ष्मण का प्रेम केवल साथ रहने तक सीमित नहीं था; वे राम की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते थे।

चरण 2: त्याग और सेवा का उदाहरण जोड़िए राम बताते हैं कि लक्ष्मण उनके हित के लिए माता-पिता को छोड़कर वन आए और वहाँ शीत, धूप तथा वायु के कष्ट सहे। राजकीय सुखों के स्थान पर कठिन वनजीवन चुनना उनका स्वेच्छापूर्ण त्याग है। राम की रक्षा और सेवा उनके जीवन का ध्येय है। इसीलिए उनके मूर्च्छित होने पर राम स्वयं को असहाय अनुभव करते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का उत्तर लिखिए लक्ष्मण राम से अत्यंत प्रेम करते हैं और उनका दुःख सह नहीं सकते। राम के हित के लिए वे माता-पिता और राजसुख छोड़कर वन आते हैं तथा शीत, धूप और वायु के कष्ट सहते हैं। राम की सेवा और रक्षा को अपना कर्तव्य मानना उनका समर्पण है। मूर्च्छित लक्ष्मण के इन गुणों का स्मरण करते हुए राम का विलाप उनके निःस्वार्थ भ्रातृप्रेम को उजागर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष लक्ष्मण का प्रेम संवेदनशील और उनका समर्पण त्यागपूर्ण है; राम के हित में वन के कष्ट सहना इसका स्पष्ट उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में राम के विलाप से एक भाव और लक्ष्मण के वनगमन से एक ठोस उदाहरण जोड़िए।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि 'सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन' ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है। पंक में उगने वाला छोटा कमल सामान्य, उपेक्षित जन का संकेत देता है।
- जल-प्लावन का दृश्य सामाजिक अर्थ भी रखता है। विप्लव से बड़े और शक्तिशाली विचलित होते हैं, जबकि छोटे लोगों में नई आशा जागती है।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब पहचानिए पंक अर्थात कीचड़ में ही जल का भराव और प्लावन होता है। वहीं छोटा कमल खिलता है। कवि ने इसी प्राकृतिक दृश्य को सामाजिक परिवर्तन के संकेत से जोड़ा है। अतः पंक्ति को केवल बाढ़ से होने वाले नुकसान का विवरण मानना अधूरा होगा।

चरण 2: सामाजिक आशय स्पष्ट कीजिए कविता में अट्टालिकाएँ संपन्न वर्ग की भयभीत अवस्था और छोटा कमल साधारण जन की उमंग का संकेत है। क्रांति का संबंध धरातल पर रहने वाले वंचित जन से है; उसी के बीच परिवर्तन की आशा पनपती है। जल-विप्लव का बिंब उनके उत्थान का भाव व्यक्त करता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लिखिए पंक में ही जल-प्लावन होता है और वहीं छोटा कमल खिलता है। पंक सामान्य, वंचित जन का तथा बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति उन्हीं के बीच परिवर्तन की आशा जगाती है, जिससे छोटे लोगों का जीवन खिल उठता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस पंक्ति में पंक और जल-प्लावन के माध्यम से वंचित जन के बीच क्रांति तथा नए जीवन की संभावना व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: पंक, छोटा कमल और बादल को साथ पढ़कर प्राकृतिक दृश्य का सामाजिक अर्थ बताइए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बगुलों के पंख' कविता से उद्धृत 'उसे कोई तनिक रोक रक्खो' पंक्ति से क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में काले बादलों की पृष्ठभूमि में उड़ते सफेद बगुलों का सौंदर्य कवि का मन मोह लेता है।

- कविता में मन के उड़ जाने का भाव सौंदर्य में तल्लीन होने का संकेत है। दृश्य को रोकने की इच्छा उस आनंद को देर तक अनुभव करने की चाह है।

चरण 1: दृश्य से मन की स्थिति जोड़िए काले बादलों पर सफेद बगुलों की उजली उड़ान सुंदर विरोधी रंगों का दृश्य रचती है। उसे देखते हुए कवि का मन अपने नियंत्रण से बाहर होकर उसी दृश्य की ओर खिंच जाता है। यह मन की सौंदर्य के प्रति सहज आसक्ति है।

चरण 2: रोकने की इच्छा का आशय समझिए बगुलों की उड़ान का दृश्य क्षणिक है और कवि उसे खोना नहीं चाहता। वह उस मोहक सौंदर्य और उसमें डूबे अपने मन को रोक रखना चाहता है, ताकि आनंद कुछ देर और बना रहे। इसे पक्षियों को पकड़ने या उनकी उड़ान रोकने का व्यावहारिक आदेश नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लिखिए काले बादलों में उड़ते सफेद बगुलों का सौंदर्य कवि का मन मोह लेता है। उसका मन इस दृश्य के साथ उड़ने लगता है। वह उस मोहक दृश्य और उसमें रमे मन को रोककर सौंदर्य का आनंद कुछ देर और लेना चाहता है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति सौंदर्य में तल्लीन मन तथा क्षणिक सुंदर दृश्य को देर तक संजोए रखने की उत्कट इच्छा व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: रोकने की इच्छा को बगुलों की कैद से न जोड़ें; दृश्य में बँधे मन और सौंदर्यानुभूति पर ध्यान दें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पतंग' कविता के संदर्भ में बच्चों और कपास के बीच का संबंध स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में बच्चों की देह कपास जैसी हलकी बताई गई है। यह उपमा उनके उत्साह और निर्भय गति को प्रकट करती है।
- कपास का हलकापन और उसकी उड़ सकने की सहजता बच्चों की कल्पना तथा उमंग से जुड़ते हैं। तुलना वास्तविक भार का वैज्ञानिक दावा नहीं है।

चरण 1: उपमा का आधार पहचानिए कपास बहुत हलकी होती है। कवि को पतंग उड़ाते बच्चों की तेज, उछलती-कूदती गति में वैसा ही हलकापन दिखाई देता है। उनकी देह मानो धरती के भार से मुक्त हो गई हो। यहाँ समानता मुख्यतः हलकेपन और गतिशीलता की है।

चरण 2: बच्चों की मनःस्थिति स्पष्ट कीजिए पतंग उड़ाने के आनंद में बच्चे भय और संकोच भूल जाते हैं। दौड़ते और उछलते समय उन्हें अपना शरीर बोझिल नहीं लगता। कपास की उपमा इसी उमंग, सहजता और ऊँचाई की ओर जाने की आकांक्षा को मूर्त करती है; इसका अर्थ बच्चों की दुर्बलता बताना नहीं है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लिखिए कवि ने बच्चों की देह को कपास की तरह हलका बताया है। पतंग उड़ाने के उत्साह में वे निर्भय होकर दौड़ते और उछलते हैं। कपास का हलकापन बच्चों की सहज गति, उमंग और मानो आकाश में उड़ जाने की इच्छा व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों और कपास में हलकेपन की समानता है, जो बच्चों की उमंग तथा निर्भय गतिशीलता को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: तुलना का आधार कपास का हलकापन बताइए और उसे बच्चों के पतंग उड़ाने के उत्साह से जोड़िए।

8. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्यों कि इस करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह !
आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
ज़ोर ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया। [5 अंक]

8(i). 'बात की चूड़ी मरना' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) बात का पकड़ में न आना
(B) बात का प्रभावहीन हो जाना
(C) कथ्य और माध्यम का तालमेल होना
(D) बात में कसाव और ताकत का होना

सही उत्तर: (B) बात का प्रभावहीन हो जाना

हल:

अवधारणा:

- पेंच की चूड़ी घिस जाए तो उसकी पकड़ समाप्त हो जाती है। कविता में इसी बिंब से बात की संप्रेषण-शक्ति का नष्ट होना व्यक्त है।
- अर्थ तय करते समय अगली पंक्ति में भाषा में बेकार घूमने की स्थिति को प्रमाण बनाइए।

चरण 1: बिंब से अर्थ निकालिए कवि बात को अनावश्यक बल लगाकर भाषा में फिट करने की कोशिश करता है। जैसे अधिक कसने से पेंच की चूड़ी मर जाती है, वैसे ही बात अपना प्रभाव खो देती है। भाषा में उसका बेकार घूमना इसी निष्प्रभाविता को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच कीजिए (A) बात के समझ में न आने या पकड़ में न आने पर केंद्रित है, जबकि यहाँ प्रभाव नष्ट हुआ है। (B) यही आशय बताता है। (C) कथ्य और माध्यम के सफल तालमेल का अर्थ देता है और (D) कसाव तथा ताकत बने रहने का; दोनों वर्णित असफलता के विपरीत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'बात की चूड़ी मरना' का अर्थ बात का प्रभावहीन हो जाना है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पेंच की पकड़ खत्म होने और बात के असर खत्म होने में समानता देखकर विकल्प चुनिए।

8(ii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : कथ्य के भाव या अभिव्यक्ति के अनुरूप ही भाषा का चुनाव करना चाहिए।

कारण : भाषा के शब्द-जाल में फँसकर कथ्य की जीवंतता और सार्थकता नष्ट हो जाती है। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, लेकिन कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथ्य और भाषा का सहज सामंजस्य अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाता है। केवल शब्दों के प्रदर्शन से बात का वास्तविक आशय खो सकता है।
- कथन-कारण में दोनों की सत्यता के बाद यह भी जाँचना आवश्यक है कि कारण कथन की आवश्यकता समझाता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचिए कथन सही है। बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए भाषा उसके भाव के अनुरूप होनी चाहिए। अंश में पेंच को अधिक कसने का बिंब बताता है कि भाषा पर अनुचित जोर देने से अभिव्यक्ति बिगड़ जाती है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचिए कारण भी सही है। शब्द-जाल में उलझने पर कथ्य की सहजता, जीवंतता और सार्थकता नष्ट होती है। अंश में बात की चूड़ी मरना और भाषा में उसका बेकार घूमना इसी परिणाम को व्यक्त करते हैं।

चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प जाँचिए कारण बताता है कि कथ्य के अनुकूल भाषा क्यों चुननी चाहिए: ऐसा न करने पर बात का प्रभाव मिट जाता है। इसलिए वह कथन की सही व्याख्या है। (A) दोनों को गलत और (B) कथन को गलत मानते हैं; (C) सही व्याख्यात्मक संबंध नकारता है। ये तीनों अनुचित हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचिए, फिर पूछिए कि शब्द-जाल का नुकसान भाषा-चयन की जरूरत समझाता है या नहीं।

8(iii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
1. पेंच खोलना	(i) कथ्य के माध्यम को सरल बनाना
2. बेतरह कसना	(ii) बात में कसावट का न होना
3. कील की तरह ठोंकना	(iii) भाषा को अलंकृत करना

[1 अंक]

(A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

सही उत्तर: (D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत पेंच खोलना कथ्य के माध्यम को सरल बनाना है। कविता में बात को समझने के लिए धैर्य चाहिए; भाषा की कठिन गाँठें खोलने पर कथ्य सहज ढंग से सामने आता है। इसलिए 1 का संबंध (i) से है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण बेतरह कसना भाषा को अनावश्यक रूप से अलंकृत करना है, अतः 2 का संबंध (iii) से है। कील की तरह ठोंकना असफल अभिव्यक्ति को जबरन स्थापित करना है; उसमें स्वाभाविक कसावट नहीं रहती, इसलिए 3 का संबंध (ii) से है। (A) और (C) पेंच खोलने का अर्थ गलत बताते हैं। (B) दूसरे और तीसरे पद का अर्थ उलटता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन 1-(i), 2-(iii), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले पेंच खोलने का सहजता वाला अर्थ मिलाइए, फिर बेतरह कसने को भाषा के आडंबर से जोड़िए।

8(iv). कवि भाषा को और अधिक तराशने में क्यों लगा रहा ? [1 अंक]

(A) भाषा का महत्त्व न जानने के कारण

(B) आत्म-संतुष्टि प्राप्त न होने के कारण

(C) संप्रेषणीय शब्द न मिलने के कारण

(D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

सही उत्तर: (D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत कवि बताता है कि उसे अपने करतब पर तमाशबीनों की शाबाशी और वाहवाही साफ सुनाई दे रही थी। यही प्रशंसा उसे भाषा को और अधिक तराशने तथा पेंच को बेतरह कसते जाने के लिए प्रेरित करती रही।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (D) में लोगों से मिलने वाली प्रशंसा इसी स्पष्ट कारण को व्यक्त करती है। (A) में भाषा का महत्त्व न

जानने की बात अंश में नहीं कही गई। (B) में आत्मसंतुष्टि का अभाव और (C) में संप्रेषणीय शब्द न मिलना बताया गया है, जबकि कवि स्वयं बाहरी वाहवाही को कारण बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण कवि भाषा को और अधिक तराशने में लगा रहा। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर काव्यांश के क्योंकि वाले प्रसंग और उसके बाद मिलने वाले स्पष्ट संकेत को देखिए।

8(v). 'क्यों कि इस करतब पर मुझे' – पंक्ति में किस करतब की बात हो रही है ? [1 अंक]

(A) भाषा को अलंकृत करने की

(B) कथ्य को अलंकृत करने की

(C) कविता पाठ करने की

(D) पाठक और श्रोताओं को लुभाने की

सही उत्तर: (A) भाषा को अलंकृत करने की

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत पंक्ति का करतब पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसते जाने से जुड़ा है। कवि सीधी बात की भाषा को सहज रखने के स्थान पर उसमें अनावश्यक सजावट और जटिलता बढ़ाता जाता है। यह भाषा को अलंकृत करने का कौशल प्रदर्शन है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) इसी भाषायी करतब को बताता है। (B) में कथ्य को अलंकृत करना है, जबकि कठिनाई अभिव्यक्ति की भाषा में पैदा हो रही है। (C) के कविता पाठ का वर्णन नहीं है। (D) में पाठक और श्रोताओं को लुभाना संभावित उद्देश्य हो सकता है, पर प्रश्न करतब की क्रिया पूछता है, उसका उद्देश्य नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ भाषा को अलंकृत करने के करतब की बात हो रही है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: करतब की पहचान करते समय की गई क्रिया और उससे मिलने वाली प्रशंसा को अलग रखकर उत्तर चुनिए।

---

9. जेठ की जलती धूप में, जब धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ – 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास !' ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं। [5 अंक]

9(i). "शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।" इस कथन के समर्थन में विकल्प है : [1 अंक]

(A) शिरीष के साथ और पेड़ों की तुलना नहीं हो सकती।

(B) शिरीष मन रमने पर भादों में भी फूलों से लदा रहता है।

(C) शिरीष के पेड़ों पर वसंत ऋतु में फूल आते हैं और आषाढ़ तक रहते हैं।

(D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण नि:स्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

सही उत्तर: (D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण नि:स्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत गद्यांश में धरती को जेठ की धूप में निर्धूम अग्निकुंड कहा गया है। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में भी शिरीष फूलों से लदा रहता है। उमस और लू के बीच उसका अविचल खिलना जीवन की अजेय शक्ति का प्रमाण है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण अवधूत की तरह निर्लिप्त रहकर प्रतिकूलता सहना (D) में सबसे समग्र रूप में व्यक्त है। (A) केवल अन्य पेड़ों से तुलना का कथन है। (B) भादों तक खिलने और (C) वसंत से आषाढ़ तक फूल रहने की अवधि बताते हैं; दोनों में विपरीत परिस्थितियों पर विजय का पूरा आशय नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष अजेय जिजीविषा के कारण प्रचंड गरमी में नि:स्पृह और अविचल खड़े रहने वाला विकल्प (D) सही है।

त्वरित सुझाव: अजेयता और अवधूत जैसे शब्दों को केवल फूलने की अवधि से नहीं, प्रतिकूलता में अविचल रहने से जोड़िए।

9(ii). 'दिन दस फूला ....' पंक्ति का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? [1 अंक]

(A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए

(B) जीवन की नश्वरता का उल्लेख करने के लिए

(C) शिरीष के फूलों को औरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

(D) जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करने के लिए

सही उत्तर: (A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।

- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत उद्धरण से ठीक पहले लेखक आरग्वध के पंद्रह-बीस दिन फूलने की तुलना वसंत के पलाश से करता है। फिर कहता है कि दस दिन फूलकर खंखड़ हो जाना कबीर को पसंद नहीं था। इस क्रम में पलाश के फूलने की अल्प अवधि सामने आती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (A) उद्धरण का सीधा संदर्भ है। (B) और (D) जीवन की नश्वरता या क्षणभंगुरता के व्यापक दार्शनिक अर्थ हैं, पर यहाँ फूलों की कम अवधि की चर्चा है। (C) पूरे अनुच्छेद में शिरीष की प्रशंसा का व्यापक उद्देश्य हो सकता है, किंतु उद्धृत पंक्ति का तत्काल संदर्भ पलाश की अल्पायु है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का प्रयोग पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए हुआ है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का संदर्भ चुनते समय उससे ठीक पहले के वाक्य को पढ़िए और व्यापक विषय से भेद कीजिए।

9(iii). 'नितांत ठूँठ हृदय' से अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) नीरस

(B) सरस

(C) कोमल

(D) समृद्धिहीन

सही उत्तर: (A) नीरस

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत ठूँठ उस वृक्ष को कहते हैं जिसमें हरियाली और जीवन का उल्लास दिखाई न दे। हृदय के लिए इसका लाक्षणिक प्रयोग सौंदर्य और संवेदना के प्रति नीरसता का संकेत करता है। लेखक कहता है कि वह नितांत ठूँठ नहीं है, क्योंकि शिरीष के फूल उसके मन में हिल्लोल पैदा करते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण अतः (A) का नीरस अर्थ प्रसंगानुकूल है। (B) सरस इसका विपरीत अर्थ देता है। (C) कोमल संवेदनशीलता बताता है, जो ठूँठ के अर्थ के अनुकूल नहीं है। (D) समृद्धिहीन आर्थिक या भौतिक अभाव की ओर जाता है; गद्यांश में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष नितांत ठूँठ हृदय का अभिप्राय नीरस हृदय है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: लाक्षणिक शब्द का अर्थ आसपास बताई गई अनुभूति से चुनिए; यहाँ फूलों से मन में उठने वाला हिल्लोल संकेत है।

9(iv). निम्नलिखित में हिन्दी मास का नाम नहीं है : [1 अंक]

(A) ज्येष्ठ

(B) आषाढ़

(C) भाद्रपद

(D) वसंत

सही उत्तर: (D) वसंत

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत प्रश्न उस नाम को चुनने के लिए कहता है जो हिंदी मास नहीं है। ज्येष्ठ, आषाढ़ और भाद्रपद पंचांग के मास हैं। गद्यांश में ज्येष्ठ का प्रचलित रूप जेठ और भाद्रपद का प्रचलित रूप भादों भी आया है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण वसंत एक ऋतु का नाम है; इसे किसी एक मास का नाम नहीं माना जाता। इसलिए (D) प्रश्न की नहीं वाली शर्त पूरी करता है। (A) ज्येष्ठ, (B) आषाढ़ और (C) भाद्रपद सभी वास्तविक मास के नाम हैं, अतः इन्हें उत्तर चुनना प्रश्न की निषेधात्मक शर्त की उपेक्षा होगी।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी मास का नाम नहीं होने वाला शब्द वसंत है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: नहीं शब्द को पहले ध्यान में रखिए और विकल्पों को मास तथा ऋतु की दो श्रेणियों में बाँटकर देखिए।

9(v). 'ऐसे दुमदारों से ....' लोकोक्ति का अर्थ गद्यांश के संदर्भ में है : [1 अंक]

(A) छोटी पूँछ होने से बेहतर है, न होना

(B) कम होने से बेहतर है, न होना

(C) कम साधनों से साधनहीनता अच्छी है

(D) अल्पावधि से अवधिहीनता अच्छी है

सही उत्तर: (B) कम होने से बेहतर है, न होना

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश के शब्दों और उनके प्रसंग से उत्तर का निर्णय करना आवश्यक है।
- सही विकल्प मूल भाव को व्यक्त करता है; अन्य विकल्पों के अर्थ से उसका अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अंश का निर्णायक संकेत लेखक थोड़े समय के लिए फूलकर फिर खंखड़ हो जाने वाले फूलों की चर्चा करता है। ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले कहकर वह क्षणिक और अपर्याप्त शोभा की उपयोगिता पर व्यंग्य करता है। यहाँ लोकोक्ति का आशय कम या अधूरा होने की अपेक्षा न होना बेहतर बताना है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) इस सामान्य आशय को व्यक्त करता है। (A) छोटी पूँछ का शाब्दिक अर्थ देता है, जबकि फूलों के प्रसंग में वास्तविक पूँछ की चर्चा नहीं है। (C) साधनों का प्रश्न उठाता है, जो अंश का विषय नहीं है। (D) अल्पावधि और अवधिहीनता की अमूर्त तुलना करता है, पर लोकोक्ति का स्वाभाविक भाव कम होने की अपेक्षा न होने का है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के संदर्भ में अर्थ है: कम होने से बेहतर है, न होना। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: लोकोक्ति में पूँछ जैसे शब्दों का शाब्दिक अर्थ छोड़कर पहले फूलों की क्षणिक शोभा वाला प्रसंग पहचानिए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ में 'बाल विवाह' जैसी किन-किन सामाजिक कुप्रथाओं का संकेत मिलता है ? वर्तमान भारत में इनमें क्या सुधार आया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में पाठ की घटनाओं से सामाजिक बुराइयाँ पहचाननी हैं और आज आए सुधारों का संतुलित विवेचन करना है।
- सुधार का अर्थ पूर्ण समाप्ति नहीं है; शिक्षा और जागरूकता से हुए परिवर्तन के साथ शेष समस्याएँ भी स्वीकारनी हैं।

चरण 1: पाठ से सामाजिक समस्याएँ पहचानें भक्तिन का अल्पायु में विवाह बाल विवाह की प्रथा दिखाता है। पुत्रियों को जन्म देने पर उसकी उपेक्षा स्त्री और पुत्री के प्रति भेदभाव प्रकट करती है। विधवा पुत्री की संपत्ति हथियाने का प्रयास तथा उसकी इच्छा के विरुद्ध संबंध थोपने वाला पंचायत का निर्णय पितृसत्ता और अन्याय के उदाहरण हैं। इन घटनाओं का उल्लेख करके उत्तर को पाठ पर आधारित रखना चाहिए। विधवा की इच्छा की उपेक्षा से स्पष्ट होता है कि परिवार और पंचायत स्त्री को स्वतंत्र निर्णय लेने वाला व्यक्ति नहीं मानते थे। इसलिए सुधार का प्रमुख मापदंड स्त्री की गरिमा और निर्णय की स्वतंत्रता है।

चरण 2: सुधारों से जोड़कर आदर्श उत्तर लिखें 'भक्तिन' में बाल विवाह, पुत्री-जन्म पर स्त्री की उपेक्षा, विधवाओं का शोषण और पंचायत द्वारा स्त्री की इच्छा कुचलने जैसी कुप्रथाएँ मिलती हैं। आज शिक्षा, स्त्री-अधिकारों की जागरूकता तथा बाल विवाह रोकने के प्रयासों से सुधार हुआ है। महिलाएँ अधिक आत्मनिर्भर हुई हैं। फिर भी लिंगभेद और रूढ़ियाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुईं; निरंतर सामाजिक जागरूकता आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष पाठ सामाजिक अन्याय को उजागर करता है; वर्तमान सुधारों को स्वीकारते हुए बची हुई असमानताओं के प्रति सचेत रहना चाहिए।

त्वरित सुझाव: बाल विवाह के साथ पुत्री-भेदभाव और विधवा-शोषण की पाठगत घटनाएँ जोड़ें; सभी कुप्रथाओं के मिट जाने का दावा न करें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

समय के साथ-साथ बाज़ारों के स्वरूप में बदलाव और विस्तार आया है, आपको किस प्रकार के बाज़ार में खरीददारी करना पसंद है और क्यों ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न व्यक्तिगत पसंद के साथ उसके पक्ष में व्यावहारिक कारण देने की क्षमता परखता है।
- बाज़ार दर्शन का केंद्रीय संकेत है कि अपनी वास्तविक आवश्यकता पहचानकर खरीदना चाहिए; आकर्षण से संचालित खरीदारी विवेक को कमजोर करती है।

चरण 1: पसंद और तर्क निश्चित करें व्यक्तिगत उत्तर में स्थानीय बाज़ार, बड़े विक्रय-केंद्र या ऑनलाइन बाज़ार में से कोई भी पसंद बताई जा सकती है। पसंद का समर्थन वस्तु की गुणवत्ता, कीमत, सुविधा और आवश्यकता जैसे ठोस आधारों पर होना चाहिए। यहाँ स्थानीय बाज़ार चुना गया है, क्योंकि वस्तु प्रत्यक्ष देखना और विक्रेता से बात करना संभव होता है। अन्य बाज़ारों को बिना कारण खराब कहना आवश्यक नहीं है। आवश्यकता के अनुसार खरीदना पाठ के संदेश से जुड़ता है। दुकान छोटी हो या बड़ी, केवल सजावट और छूट देखकर वस्तुएँ लेना विवेकपूर्ण उपभोग नहीं है। पसंद बताते समय इस सावधानी को भी स्पष्ट करना उपयोगी है।

चरण 2: आदर्श उत्तर लिखें समय के साथ हाट और स्थानीय दुकानों से बाज़ार का विस्तार बड़े विक्रय-केंद्रों तथा ऑनलाइन मंचों तक हुआ है। मुझे स्थानीय बाज़ार में खरीदारी पसंद है। वहाँ वस्तु की गुणवत्ता परखने, मूल्य की तुलना करने और विक्रेता से सीधे संवाद का अवसर मिलता है। स्थानीय व्यापारियों को भी सहयोग मिलता है। मैं सूची बनाकर आवश्यक वस्तुएँ खरीदता हूँ, जिससे अनावश्यक खर्च से बचता हूँ।

चरण 3: निष्कर्ष स्थानीय बाज़ार की पसंद गुणवत्ता की प्रत्यक्ष जाँच, संवाद और आवश्यकता के अनुसार खरीदारी जैसे तर्कों से समर्थित

है।

त्वरित सुझाव: किसी एक बाज़ार को स्पष्ट रूप से चुनें और उसकी पसंद के कम से कम दो व्यावहारिक कारण आवश्यकता-बोध से जोड़ें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"जो चीज़ मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे ?" 'काले मेघा पानी दे' पाठ में यह कथन किसके द्वारा तथा किस संदर्भ में कहा गया ? आप वक्ता के विचारों से कहाँ तक सहमत हैं ? पक्ष या विपक्ष में उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-आधारित उत्तर में वक्ता, घटना और विचार पर अपना पक्ष तीनों स्पष्ट करने चाहिए।
- जीजी का कथन देने और पाने के पारस्परिक संबंध तथा लोक-आस्था को व्यक्त करता है; अपनी सहमति तर्क के साथ रखनी है।

चरण 1: वक्ता और प्रसंग पहचानें यह कथन जीजी का है। सूखे के समय इंदर सेना की टोली पर पानी डालने को लेखक पानी की बरबादी मानते थे। जीजी इसे वर्षा के लिए किया गया अर्पण समझाती हैं। उनके तर्क में पहले कुछ देने पर अधिक प्राप्त होने की आशा है। उत्तर में इसे सामान्य दान की घटना न बनाकर पानी के अभाव और वर्षा की कामना से जोड़ना चाहिए। जीजी के विचार की दो परतें हैं। पहली परत है उदारता, जिसमें व्यक्ति केवल अपने लिए संग्रह नहीं करता। दूसरी परत है अनुष्ठान के कारण वर्षा होने की मान्यता। पहली को स्वीकारकर दूसरी पर प्रश्न उठाना विरोधाभास नहीं है; इससे उत्तर में श्रद्धा और विवेक दोनों का उचित मूल्यांकन होता है।

चरण 2: तर्क सहित आदर्श उत्तर लिखें यह कथन जीजी ने लेखक से कहा था। सूखे में इंदर सेना पर पानी डालने को लेखक व्यर्थ मानते थे। जीजी ने वर्षा पाने के लिए पहले पानी अर्पित करने का तर्क दिया। मैं उनके त्याग और सहयोग के भाव से सहमत हूँ, किंतु पानी बहाने से वर्षा होने की धारणा से नहीं। जल-संकट में संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग अधिक उपयोगी हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी के कथन में निहित त्याग का मूल्य स्वीकार्य है; वर्षा के लिए पानी बहाने की मान्यता पर तर्कपूर्ण असहमति रखी जा सकती है।

त्वरित सुझाव: पहले जीजी और इंदर सेना का प्रसंग लिखें, फिर त्याग के मूल्य तथा वर्षा-संबंधी विश्वास को अलग करके अपना पक्ष दें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

हैजे और मलेरिया से पीड़ित गाँव की स्थिति का वर्णन 'पहलवान की ढोलक' पाठ के अनुसार अपने शब्दों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गाँव की भौतिक दुर्दशा और लोगों की मानसिक दशा दोनों को संक्षेप में सामने लाता है।
- पाठ में बीमारी, मृत्यु, निर्धनता और सन्नाटा मिलकर भयावह वातावरण बनाते हैं; ढोलक की ध्वनि इसी निराशा के बीच साहस देती है।

चरण 1: स्थिति के मुख्य बिंदु चुनें हैजा और मलेरिया गाँव को जकड़ चुके थे। उपचार और साधनों के अभाव में असहाय लोग मृत्यु के भय में जी रहे थे। चारों ओर फैले सन्नाटे को कराहें और रोना तोड़ते थे। वर्णन में बीमारी के नाम मात्र लिखने के बजाय उसका जनजीवन पर पड़ा प्रभाव बताना आवश्यक है। बीमारी के साथ निर्धनता ने संकट गहरा दिया था; इसलिए गाँव का चित्र केवल उदासी नहीं, जीवन के लिए असहाय संघर्ष का भी चित्र है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर हैजे और मलेरिया से गाँव में मृत्यु और भय का वातावरण था। निर्धन ग्रामीण उपचार के अभाव में असहाय थे। रात का सन्नाटा कराहों और रोने से टूटता था। ऐसे निराशाजनक समय में पहलवान की ढोलक उन्हें साहस देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी ने गाँव को निर्धनता, असहायता, भय और शोक से घेर लिया था।

त्वरित सुझाव: वर्णन में बीमारी, उपचार का अभाव और भयभीत वातावरण जोड़ें; ढोलक की भूमिका को अंत में संक्षेप में रखें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि महादेवी जी के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में भक्तिन की स्वामिनी के प्रति निष्ठा और उसके व्यवहार का आधार समझना है।
- साहित्यकारों के प्रति उसका सम्मान महादेवी जी के साथ उनके संबंध से निर्धारित होता है।

चरण 1: सम्मान का आधार पहचानना पाठ में लेखिका स्पष्ट करती हैं कि उनके साहित्यिक बंधुओं के प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा इस बात पर निर्भर थी कि वे महादेवी जी का कितना सम्मान करते हैं। इसलिए केवल किसी की प्रसिद्धि उसके सम्मान का निर्णायक आधार नहीं थी।

चरण 2: सद्भाव का संबंध स्पष्ट करना भक्तिन का उन साहित्यकारों के प्रति सद्भाव भी लेखिका के उनके प्रति सद्भाव से तय होता था। लेखिका के प्रिय और आदरणीय परिचित उसके लिए भी आदरणीय थे। इससे भक्तिन का महादेवी जी से गहरा आत्मीय जुड़ाव प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन साहित्यकारों का सम्मान इस आधार पर करती थी कि वे महादेवी जी का कितना सम्मान करते हैं। उनके प्रति उसका सद्भाव महादेवी जी के सद्भाव से निर्धारित होता था। उसकी कसौटी स्वामिनी के प्रति सम्मान और आत्मीयता थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सम्मान और सद्भाव के दोनों आधार लिखिए; साहित्यिक प्रसिद्धि को मापदंड मत बनाइए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि श्रम विभाजन की क्या आवश्यकता है ? पाठ में इसकी किस कमी की ओर संकेत किया गया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन से विभिन्न काम व्यवस्थित ढंग से होते हैं और कार्य-कुशलता बढ़ती है।
- आंबेडकर जाति पर आधारित श्रमिक-विभाजन और जन्म से पेशा निर्धारित करने की आलोचना करते हैं।

चरण 1: श्रम-विभाजन की उपयोगिता सभ्य समाज में अनेक प्रकार के कार्य होते हैं। व्यक्तियों की क्षमता और रुचि के अनुसार उनका बँटवारा करने से काम कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। लेखक इसलिए श्रम-विभाजन की आवश्यकता स्वीकार करते हैं।

चरण 2: जातिगत व्यवस्था का दोष जाति-प्रथा में काम व्यक्ति की इच्छा, योग्यता और प्रशिक्षण के अनुसार नहीं मिलता, बल्कि जन्म से निर्धारित होता है। इससे श्रमिक ऊँच-नीच वाले वर्गों में बँट जाते हैं और पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं रहती। पाठ में इसी अस्वाभाविक व्यवस्था की कमी बताई गई है।

चरण 3: निष्कर्ष समाज की कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन आवश्यक है। पाठ में जाति-आधारित विभाजन की कमी बताई गई है, जो रुचि और योग्यता की उपेक्षा करके जन्म से पेशा निर्धारित करता है तथा श्रमिकों में ऊँच-नीच और पेशा बदलने पर बंधन लगाता है।

त्वरित सुझाव: पहले कार्य-कुशलता की आवश्यकता लिखिए, फिर जन्म-आधारित पेशे और श्रमिकों की ऊँच-नीच का दोष बताइए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की' – 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पंतजी द्वारा यह कथन किस संदर्भ में कहा गया ? इस कथन के आलोक में पंतजी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर पंत पुरानी जीवन-पद्धति और परंपरागत मूल्यों से जुड़े पात्र हैं।
- घड़ी के प्रसंग से उनके पुराने उपहार के प्रति लगाव तथा नई पीढ़ी से विचारगत अंतर का पता चलता है।

चरण 1: कथन का प्रसंग कार्यालय में सहकर्मी चड्ढा पंतजी की कलाई पकड़कर उनकी पुरानी घड़ी का मजाक करता है। वह उसे बहुत पुराने जमाने की बताकर सस्ती जापानी डिजिटल घड़ी लेने की सलाह देता है। पंतजी बताते हैं कि वह घड़ी उन्हें विवाह में मिली थी। इसी प्रसंग में वे प्रश्न में दिया कथन कहते हैं।

चरण 2: चार चारित्रिक विशेषताएँ पहली विशेषता परंपराप्रियता है; वे पुरानी जीवन-पद्धति को सहजता से अपनाए हुए हैं। दूसरी विशेषता भावनात्मक लगाव है; विवाह में मिली घड़ी उनके लिए स्मृति का महत्व रखती है। तीसरी विशेषता सादगी है; केवल नए फैशन के कारण उपयोगी पुरानी वस्तु बदलना उन्हें आवश्यक नहीं लगता। चौथी विशेषता संयम है; चड्ढा की धृष्टता पर वे खुले विरोध या क्रोध के बजाय अपनी बात हल्के ढंग से कह देते हैं। उनकी प्रतिक्रिया में सहज विनोद भी है। वे पुरानी वस्तु को मात्र पुरानी होने के कारण अनुपयोगी नहीं मानते। यह दृष्टि उनके मितव्ययी जीवन-व्यवहार से जुड़ी हुई है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में समेकित उत्तर कार्यालय में चड्ढा ने पंतजी की पुरानी घड़ी का मजाक उड़ाकर उन्हें जापानी डिजिटल घड़ी लेने की सलाह दी। पंतजी ने बताया कि वह घड़ी उन्हें विवाह में मिली थी। तभी उन्होंने प्रश्न में दिया कथन कहा। इससे उनकी चार विशेषताएँ उभरती हैं। वे परंपराप्रिय हैं और पुराने जीवन-मूल्यों से जुड़े हैं। वे भावुक हैं; विवाह की स्मृति से उनका आत्मीय लगाव है। वे सादगीपसंद हैं और फैशन के लिए उपयोगी वस्तु बदलना जरूरी नहीं मानते। वे संयमी भी हैं; चड्ढा की धृष्टता पर नाराज होने के स्थान पर सहज विनोद से उत्तर देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष घड़ी पर चड्ढा की टिप्पणी के उत्तर में कहा गया यह कथन पंतजी की परंपराप्रियता, स्मृतियों के प्रति लगाव, सादगी और संयम को सामने लाता है।

त्वरित सुझाव: प्रसंग में चड्ढा और विवाह में मिली घड़ी का उल्लेख करके चार अलग विशेषताओं को व्यवहार से जोड़िए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' कहानी में छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले शारीरिक दंड का भी उल्लेख किया गया है। आपकी दृष्टि में छात्रों के साथ इस प्रकार का व्यवहार कहाँ तक उचित है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। वर्तमान में इसमें क्या परिवर्तन आया है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में विद्यार्थी का संघर्ष, शिक्षा के प्रति लगाव और अध्यापकों की भूमिका सामने आती है। प्रश्न में उल्लिखित शारीरिक दंड का मूल्यांकन विद्यार्थी की गरिमा और सीखने पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर करना चाहिए।
- तर्कपूर्ण उत्तर में पाठ के संदर्भ, अपने पक्ष के कारण और वर्तमान शिक्षण की अपेक्षित दिशा को जोड़ना आवश्यक है। अनुशासन का उद्देश्य आत्मसंयम विकसित करना है।

चरण 1: पाठ का संदर्भ और अपना पक्ष निर्धारित कीजिए प्रश्न में अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले शारीरिक दंड का उल्लेख है। इसका समर्थन केवल इसलिए नहीं किया जा सकता कि पहले इसे अनुशासन का साधन माना जाता था। बच्चे की गलती का कारण समझना, उसे सुधार का अवसर देना और शिक्षा के प्रति विश्वास बनाए रखना अध्यापक का दायित्व है। 'जूझ' में सौंदलगेकर का प्रेरक अध्यापन भी दिखाता है कि शिक्षक छात्र की रचनात्मक क्षमता विकसित कर सकता है।

चरण 2: कारणों और वर्तमान परिवर्तन की योजना बनाइए उत्तर में भय, अपमान, आत्मविश्वास में कमी और पढ़ाई से विमुखता को दंड के दुष्परिणाम के रूप में रखें। फिर संवाद, परामर्श और प्रोत्साहन जैसे विकल्प प्रस्तुत करें। वर्तमान परिवर्तन को शिक्षण की दिशा के रूप में लिखें; यह दावा न करें कि हर विद्यालय में शारीरिक दंड पूरी तरह समाप्त हो गया है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'जूझ' में वर्णित शारीरिक दंड मेरे विचार से अनुचित है। इससे विद्यार्थी में अनुशासन के स्थान पर भय, अपमान और हीनता उत्पन्न हो सकती है। वह अपनी कठिनाई बताने तथा प्रश्न पूछने से झिझकता है और पढ़ाई से विमुख भी हो सकता है। शिक्षक को गलती का कारण समझकर संवाद, परामर्श और प्रोत्साहन से सुधार करना चाहिए। पाठ में सौंदलगेकर जैसे प्रेरक शिक्षक छात्र की प्रतिभा निखारते हैं। वर्तमान में बालकेंद्रित शिक्षा तथा बच्चों के सम्मान और संवेदनाओं की रक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। शारीरिक दंड की जगह सकारात्मक अनुशासन, सहभागिता और सहयोग को महत्त्व मिल रहा है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः शारीरिक दंड के स्थान पर सम्मानपूर्ण और प्रेरक शिक्षण उचित है; वर्तमान शिक्षा की दिशा भी बालकेंद्रित तथा सहयोगपूर्ण अनुशासन की ओर है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले अपना स्पष्ट मत दें, फिर दंड के दो दुष्परिणाम और वर्तमान शिक्षण के सकारात्मक विकल्प जोड़ें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

सिंधु घाटी सभ्यता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि हमारे पूर्वज आज के इंजीनियरों से जल का प्रबंधन करना कहीं बेहतर जानते थे।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के पाठ 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो की सुव्यवस्थित नगर योजना, कुएँ, स्नानागार और जलनिकासी व्यवस्था का वर्णन मिलता है। तर्क पाठ में दिए भौतिक प्रमाणों पर आधारित होना चाहिए।
- जल प्रबंधन में स्वच्छ जल की उपलब्धता, उपयोग की सुविधा, रिसाव से सुरक्षा और गंदे पानी की निकासी का समन्वय आवश्यक है। प्राचीन व्यवस्था की श्रेष्ठता इन्हीं कसौटियों पर स्पष्ट की जा सकती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण चुनिए नगर के कुएँ पानी की सुलभ उपलब्धता का प्रमाण हैं। घरों के स्नानस्थलों से निकलने वाला पानी नालियों के माध्यम से बाहर जाता था। ढकी हुई नालियाँ स्वच्छता और सुविचारित जलनिकासी दिखाती हैं। विशाल स्नानागार के फर्श और दीवारों में रिसाव रोकने की सावधानी तकनीकी समझ का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

चरण 2: प्रमाणों को तुलनात्मक तर्क से जोड़िए केवल प्राचीन निर्माणों की सूची देना पर्याप्त नहीं है। समझाएँ कि आपूर्ति और निकासी को नगर योजना से जोड़ने में दूरदर्शिता थी। आधुनिक नगरों में दिखाई देने वाली जलभराव और अवरुद्ध निकासी की समस्याओं से तुलना की जा सकती है। तुलना सुव्यवस्थित प्राचीन योजना की प्रशंसा है; आधुनिक अभियांत्रिकी की प्रत्येक उपलब्धि को नकारना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में वर्णित मोहनजोदड़ो की जल व्यवस्था पूर्वजों की अद्भुत तकनीकी समझ दिखाती है। नगर में अनेक कुएँ थे, जिनसे जल आसानी से उपलब्ध होता था। घरों के स्नानस्थलों का पानी व्यवस्थित, ढकी हुई नालियों से बाहर निकलता था। विशाल स्नानागार में रिसाव रोकने के लिए निर्माण में विशेष सावधानी बरती गई थी। जल की आपूर्ति, उपयोग और निकासी का यह समन्वय स्वच्छता तथा दूरदर्शिता का प्रमाण है। आज कई नगर जलभराव और अवरुद्ध नालियों से जूझते हैं। इस तुलना में सिंधु सभ्यता की नियोजित व्यवस्था बताती है कि हमारे पूर्वज व्यावहारिक जल प्रबंधन में अत्यंत कुशल थे।

चरण 4: निष्कर्ष कुएँ, सुव्यवस्थित जलनिकासी और रिसावरोधी स्नानागार सिद्ध करते हैं कि सिंधु सभ्यता में जल प्रबंधन को समग्र नगर योजना का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया गया था।

त्वरित सुझाव: कुओं को जलापूर्ति, ढकी नालियों को निकासी और स्नानागार को रिसावरोधी निर्माण के प्रमाण के रूप में जोड़ें।